श्री संजय निरूपम: मैडम, मेरा कहना यह है कि पुरातत्व विभाग हमारे महापुरुषों के जन्म-स्थान की देखभाल नहीं कर सकता, इसलिए मेरा मानना है एक संसदीय समिति बनाई जानी चाहिए और हम जो स्वतंत्रता के 50 वर्ष के उपलक्ष्य में समारोह करने जा रहे हैं, उस में एक बड़ासा फंड जो एच०आर०डी० मिनिस्ट्री के पास आया है, उस में कुछ करोड़ रुपया इस संसदीय समिति...

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती कमला सिन्हा): जिन महापुरुषों के नाम आप चाहते हैं कि आ जाएं, वे नाम आप बता दीजिए।

श्री संजय निरूपम: मैडम, लोहिया जी है, उन के बाद डा० राजेन्द्र प्रसाद जी का जन्म-स्थान जिरादेही है मैडम, आप तो बिहार की हैं और आप वहां गयी होगी। उन के जन्म-स्थान की देखभाल भी बहुत अच्छे ढंग से नहीं हो रही है। डा० राजेन्द्र प्रसाद जी जिस घर में...

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती कमला सिन्हा): बिना विवरण के आप नाम बता दीजिए क्योंकि आप का समय समाप्त हो रहा है।

श्री संजय निरूपम: मैडम, इस के अलावा मैं लाल बहादुर शास्त्री जी के गांव राम नगर के बारे में बताना चाहता हूं। उस के बाद मैं जानकारी देना चाहता था विवेकानन्द जी के जन्म स्थान के बारे में जोकि कलकत्ता के किनापुल्ली मोहल्ला में है। मैडम, वह तो विवादास्पद हो गया है। वहां ताला लटका हुआ है। उस के अंदर सन्नाटा है और वहां कोई दिया भी नहीं जलता। ऐसी स्थिति वहां पर है। कबीर जो नरतारा में पैदा हुए थे, वहां भी कबीर के जन्म-स्थान को कोई देखने वाला नहीं है। कबीर ने इतना बड़ा एक धर्म-निरपेक्ष, पंथ-निरपेक्ष का विचार दिया और उस विचार को सारे लोग मानते हैं, लेकिन किसी के पास उसके जन्म-स्थान को देखने की फुरसत नहीं है।

मैडम, मेरी सिर्फ इतनी गुजारिश है इस सदन से आपके माध्यम से, कि सरकार को इस तरह का निर्देश दिया जाये कि जब हम आजादी का पचासवां साल सेलिब्रेट करने जा रहे हैं तो उसमें एक कार्यक्रम यह भी बनाया जाए कि हमारे महापुरुषों के जो जन्म-स्थान हैं उन जन्म-स्थानों की देखरेख करने के लिए एक संसदीय समिति बनाई जाए और उसके लिए एक फंड भी एलोट किया जाए अलग से ताकि इसी साल उन जन्म-स्थानों को सुरक्षित करने के लिए, उनको डवलप करने के लिए कुछ कार्य किया जाए।

मैडम, इसी के साथ में आपको महाराष्ट्र के बारे में भी जानकारी देना चाहूंगा कि महाराष्ट्र ने इस मामले में बहुत अच्छा उदाहरण पेश किया है कि वहां के जो महापुरूष थे, जिनमें दो-तीन बड़े महत्वपूर्ण थे अर्थात छत्रपति शिवाजी, डा० बाबासाहेब अम्बेडकर और तिलक, उन तीनों महापुरूषों के जन्म-स्थानों की देखरेख बहुत अच्छे ढंग से हो रही है। तो उसी तरह से बाकी स्टेटस में, पूरे देश में महापुरूषों के जन्म-स्थानों की देखरेख क्यों नहीं हो सकती? मैं यही एक सवाल रखना चाहता हूं सरकार के सामने और मैंने यह भी एक सजेशन दिया है कि कोई न कोई एक पार्लियामेंटरी कमेटी आप बनाइए, जिसके सारे सदस्य सभी जगह जाएं। ऐसा न हो कि पुरातत्व विभाग के अधिकारियों पर ही छोड़ दिया जाए क्योंकि पुरातत्व विभाग के अधिकारी तो अधिकारी के तौर पर काम करते हैं, नौकरशाही के तौर पर काम करते हैं। इसलिए हम सब लोगों पर जिम्मेदारी दी जाए कि हम लोग अपनी कमेटी बनाकर उन जगहों पर जाएंगे और रेगुलर रिपोर्ट करेंगे। उसी रिपोर्ट के आधार पर गवर्नमेंट एक्शन लेगी। धन्यवाद।

Need to extent the Jurisdiction of M.T.N.L., Mumbai to Mumbai Metropolitan region for the Integrated Development of the Region

PROF. RAM KAPSE (MAHARASHTRA): Madam Vice-Chairperson, Mumbai is surrounded by Municipal Corporations and Municipal bodies which are almost next door to Mumbai, Thane, Kalyan, New Mumbai, Bhiwandi, Vivar, etc. The whole area is called BMRDA metro region. There is a suburban railway. The people from surrounding areas travel daily from their places of residence in Thane, Raigad district to their working places in Mumbai. The planning of the whole area is done by the BMRDA of which the suburban railway is one. But the telephone service is carried out by three different agencies—(1) The MTNL; (2) The Telecom Authority, Kalyan District and (3) The Telecom Authority, Alibag. Local call facility is available to some townships and restricted to other areas. The residents of the Mumbai Metropolitan Region are agitated in the matter as the quality of service is of a different standard.

I urge upon the Minister of Communications to take into account the hardships being faced by the residents of the BMR and take a decision to extend the MTNL jurisdiction to the whole of BMR and oblige. Thank you. (Ends)

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती कमला सिन्हा): मौलाना ओबेदुल्ला खान आज़मी जी का राष्ट्रपति जी के साथ एपायंटमेंट है दो बजे, तो मैं उनको पहले बुलवा लेती हूं। श्री आज़मी।

Growing menace of Pollution in India especially in Metropolitan Cities.

मौलाना ओबेदुल्ला खान आज़मी (बिहार): थैंक यू मैडम, मैं आज आपके जरिए इस हाऊस की तवज्जुह एक इंतिहाई नाजुक हकीकत की तरफ दिलाना चाहता हूं। यह हकीकत एक ऐसे खतरे की निशानदेही करती है, जो आज हिंदुस्तान ही नहीं बल्कि पूरी दुनियां को तबाही के वहाने तक ले जा सकती है। अगर यह कहा जाए कि यह मसला एटमी या न्यूक्लिई हथियारों से भी ज्यादा तबाहकुन है तो मुबालगा अराई नहीं होगी क्योंकि एटमी हथियारों को खतम किया जाए या न किया जाए, कम किया जाए या न किया जाए, इस बात का पूरा इनकान है कि वह दुनियां की तबाही का सबब नहीं बनेंगे, लेकिन अगर आज हमने पोल्यूशन को रोकने के फौरी इकदामात नहीं किए तो वह दिन दूर नहीं है, जब इंसान सिसक-सिसक कर बेबसी से दम तोड़ने पर मजबूर हो जाएगा क्योंकि उस वक्त तक हर मदावा, हर ईलाज हमारी पहुंच से बाहर हो चुका होगा।

मैडम, हमारे मुल्क में पोल्यूशन के जरिए जो बीमारियां फैल रही हैं, वह अब कहने सुनने से ऊपर की बात हो चुकी है। हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली को ही एग्जाम्पल के तौर पर ले लिया जाए, जो आज की तारीख में दुनियां का बहुत ही बड़ा आलूदा शहर बन चुका है। आए दिन बयानबाजी होती रहती है कि हुकूमत पोल्यूशन से काबू पाने के लिए तरह-तरह के उपाय कर रही है, फेहरिश्त तो बहुत लंबी है, लेकिन उपाय का आलम यह है कि मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की और आज का आलम यह है कि पोल्यूशन बेलगाम का घोड़ा बना हुआ है, जैसे हुकूमत को चेलेन्ज कर रहा हो कि तुम उठाओ, कितने कदम उठाओगे, हम हमेशा तुम्हारे मुकाबले में लाखों कदम आगे रहेंगे।

इस पौल्यूशन पर काबू क्यों नहीं पाया जा रहा है, आलूदगी कम क्यों नहीं हो रही है इसकी वजह से बहुत साफ है। आज का दौर बदउनवानिया, भ्रष्टाचार और करप्शन का दौर है। हिन्दुस्तान में जिस तरह गंददी और पौल्यूशन से इस मुल्क के इंसान के जिस्मोजांन पर बन आई है उसी तरह हमारे मुल्क में पोलिटिकल तौर पर या समाजी तौर पर जो पोलिटिकल पौल्यूशन है इस पौल्यूशन में भी हमारे मुल्क की सियासी जिंदगी को अजीरन करके रख दिया है। इस पर काबू कैसे पाया जाए? कहते हैं कि बदउनवानी का खात्मा कानून के जरिए किया जाता है। मगर कानून का इस्तेमाल भी करके हम लोगों ने देख लिया, अखलाकी कदरों का इस्तेमाल भी करके हम लोगों ने देख लिया। न कानून के इस्तेमाल का कोई असर पड़ रहा है, न अखलाकी कदरों के इस्तेमाल का असर पड़ रहा है। लगता यह है कि हर डिपार्टमेंट, हर समाजी माहौल बिकाऊ बन चुका है और हम जातीय खुदगर्जियों पर इजतिमायी जिंदगी को कुरबान करने में जर्रा बराबर भी हिचकिचाने में तैयार नहीं होते। मैडम्, दिल्ली में आलुदगी का आज हाल यह है कि आप ठीक से सांस नहीं ले सकते। पूरी दिल्ली जैसे पौल्यूशन ने नरगे में ले लिया है और अब दिल्ली वाले कहीं जा भी नहीं सकते हैं। नजला, जुकाम, खांसी, एलर्जी, टी०बी०, गुर्दों की बीमारी, फेफड़ों की बीमारी पौल्यूशन की वजह से वबा इधर फैलती जा रही है। लेकिन ऐसा लगता है जैसे लोगों ने सोचने के अहसास को बिल्कुल ही खत्म कर दिया है और मरने से पहले ही लोगों ने अपनी फिक्र को मुर्दा बनाकर रख दिया है। मैडम, ऐसी सूरत में इन मसायल को अगर संजीदगी के साथ हल नहीं किया गया तो वह दिन दूर नहीं है जब हम सारी दुनियां से अपना रिस्ता-नाता तोड़ लेंगे और दुनियां दिल्ली की तरफ ताकने के लिए तैयार भी नहीं होगी। फॉर एग्जाम्पिल, अभी पिछले दिनों हमारी इसी दिल्ली में आस्ट्रेलिया की क्रिकेट टीम खेल रही थी। उसने यह कहा कि अब इसके बाद हम हिन्दुस्तान में दिल्ली में नहीं खेलेंगे। इसलिए कि दिल्ली में सांस लेने में दम घुटता है। मैं कहना चाहता हूं कि इस मोहलिक पौल्यूशन के खास मुजरमीन कौन हैं? क्या उन पर निगाह नहीं जाती। हम लोग जो जनरल तौर पर देखते हैं वह तो यह देखने को मिलता है कि छोटी-बड़ी गाड़िया, इण्डस्ट्रीज यह सारी चीजें धुंवा और पौल्यूशन पैदा करती हैं। गाड़ियों से किस तरह निबटा जा रहा है, इण्डस्ट्रीज